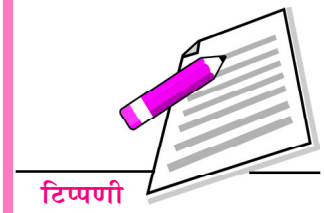

टिप्पणी

11

1857 का विद्रोह तथा भारतीय सेना में सुधार

अंग्रेजों ने अपने कार्यकाल के दौरान अनेक बार भारतीयों के प्रतिरोध का सामना किया। ये या तो सैनिक व्रिदोह थे या युद्ध, किन्तु इनमें अंग्रेजों के हथियारों ने उनकी जीत सुनिश्चित की। पिछले पाठों में आपने भारतीयों और अंग्रेजों के बीच हुए युद्धों के बारे में पढ़ा। इस पाठ में हम उन सैनिक विद्रोहों की चर्चा करेंगे जिन्हें इतिहास के विद्यार्थियों के रूप में आपको अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए लड़ने के महत्व को समझना आवश्यक है। इन विद्रोहों से सेना में भी सुधार हुए। इस पाठ में हम मुख्य विद्रोहों तथा स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम एवं सैन्य सुधारों के बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- अंग्रेजों के शासनकाल में हुए भारतीय सैनिक विद्रोह के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- सैन्य सुधारों की व्याख्या कर पाएंगे।

11.1 मद्रास की पैदल सेना का वेल्लोर विद्रोह

सैन्य इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते आपको 1806 में हुए वेल्लोर विद्रोह जिसे भारतीय विद्रोह भी कहा जाता है, के बारे में अवश्य जानना चाहिए। यह अंग्रेजों के विरुद्ध पहला विद्रोह था। इस विद्रोह का कारण परिधान-संहिता में किया गया परिवर्तन था। नयी परिधान संहिता में मुस्लिम सिपाही दाढ़ी नहीं रख सकते थे। उन्हें मूंछ छोटी करने को कहा गया तथा हिन्दू सिपाही माथे पर तिलक नहीं लगा सकते थे। यह आदेश मद्रास सेना के मुख्य कमांडर जनरल सर जॉन क्रैडॉक ने दिया था। उन्होंने सिपाहियों को गोल टोपी पहनने को कहा जो यूरोपीय टोपी से मिलती थी तथा इससे लगता था कि पहनने वाला व्यक्ति ईसाई बन गया है। इसके कारण हिन्दू व मुस्लिम वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंची तथा भारतीय सैनिकों के साथ दुर्व्यवहार भी होता था। इस विद्रोह में सैनिकों ने वेल्लोर किले पर कब्जा कर लिया तथा 150 अंग्रेज सैनिकों को ज़ख्मी किया।

11.1.1 स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध

1857 की क्रांति के अनेक कारण थे। यह विद्रोह काफी समय से सैनिकों के मन में पनप रहा था। हम जानते हैं कि कंपनी ने हिन्दू और मुस्लिम सैनिकों की बड़ी संख्या में भर्ती की। ब्रिटिश कंपनी सेना में 300,000 भारतीय सैनिक थे तथा 50,000 ब्रिटिश सैनिक थे।

भारतीय सैनिकों तथा ब्रिटिश सैनिकों की संख्या पर ध्यान दीजिए। यह फौज तीन प्रेसीडेंसी में विभाजित थी। मद्रास सेना तथा बॉम्बे सेना की तुलना में बंगाल की सेना में उच्च जाति के लोग थे जैसे ब्राह्मण, राजपूत आदि। यह भर्ती शारीरिक आधार, बहादुरी तथा हिम्मत पर आधारित न होकर जाति पर आधारित थी। इस विद्रोह के क्या कारण थे?

- पहला कारण उच्च जाति की भर्ती (बिना किसी योग्यता के) के कारण सिपाहियों में असंतोष था।
- दूसरे यह भ्रम फैलाया गया था कि ब्रिटिश हिन्दू तथा मुस्लिमों को ईसाई बना रहे हैं तथा सती प्रथा बंद करवाने के लिए भी काम कर रहे हैं।
- इसके अलावा छोटे-छोटे मुद्दे थे जैसे- भारतीय सैनिकों को देर से पदोन्नति मिलती थी तथा विदेशी सेवा से वंचित रखा जाता था।
- यह कहा जाता है कि विद्रोह की चिंगारी राइफलों के कारतूसों पर सूअर या गाय की चर्बी लगी होने की अफवाह से भड़की। इस कारतूस को प्रयोग करने से पहले मुंह से छीलना होता था जिससे हिन्दू और मुसलमान की भावनाएं आहत हुईं।

? क्या आप जानते हैं?

मंगल पांडे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में एक उच्च जाति के हिन्दू परिवार में पैदा हुए थे। वह छोटी उम्र में 34वें बंगाल देशी पैदल सेना में एक सिपाही के पद पर भर्ती हुए। आख्यान से पता चलता है कि वह 9 फीट के लंबे आदमी थे। वह नई एन फील्ड राइफल के शुरू किए जाने से बहुत क्रोधित थे। यह अफवाह थी कि कारतूस गाय तथा सूअर की चर्बी से बनी हुई थी। इस राइफल को प्रयोग करने के लिए सिपाहियों को कारतूस को दांतों से काटना पड़ता था।

इससे नाराज होने तथा अपना क्रोध दिखाने के लिए उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाई करने का फैसला किया। 29 मार्च, 1857 को उन्होंने 34वें बंगाल देसी पैदल सेना के लेफ्टिनेंट बाग द एडजेंट को गोली मार दी। उन्होंने अपने साथी सिपाहियों को भी साथ देने के लिए उकसाया। बाद में उन्हें चोटिल अवस्था में गिरफ्तार कर लिया गया और फांसी की सजा दी गई। 8 अप्रैल, 1857 को फांसी दिए जाने की निश्चित तारीख से दस दिन पहले उन्हें फांसी दे दी गई। मंगल पांडे के साहस तथा उत्साह से भरपूर कार्रवाई से पूरे देश में विद्रोह तय की गई तारीख से पहले शुरू हो गया। भारत सरकार ने 1984 में उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया।

इस विद्रोह के बाद अंग्रेजों के खिलाफ अनेक विद्रोह हुए। आपने झांसी की रानी, तात्या टोपे आदि का नाम सुना होगा। राजपूत तथा जाट समुदाय के लोगों ने विद्रोह में बढ़-चढ़कर हिस्सा

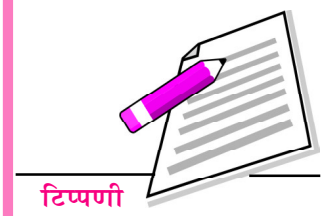

लिया। कंपनी इस विद्रोह को दबाने में सफल रही। किन्तु भारत को ब्रिटिश रानी के अधीन कर दिया गया। सेना का ढांचा भी पूर्णतया परिवर्तित हो गया।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. भारत के सैनिकों द्वारा 1806 में किए गए पहले विद्रोह का क्या नाम है?
2. 1857 में कौन-सा विद्रोह हुआ था?
3. उस सिपाही का नाम बताइए जिन्होंने एक अंग्रेज फौजी को चोट पहुंचाकर घायल किया था?

11.3 भारतीय सेना में सुधार

ईस्ट इंडिया कंपनी की असफलता ने महारानी को भारत की बागडोर अपने हाथ में लेने के लिए तैयार किया और भारत को ब्रिटिश ताज के अधीन कर दिया गया। आगे हम यह जानेंगे कि ब्रिटिश साम्राज्य के आने पर कौन से सैनिक सुधार हुए। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद कम्पनी का शासन समाप्त हो गया और क्राउन ने भारत को अपने अधीन ले लिया। 1 नवम्बर, 1858 को इलाहाबाद में ब्रिटिश दरबार लगाया गया। लॉर्ड कैनिंग ने ब्रिटिश रानी की घोषणा को पढ़कर सुनाया। इस पत्र को 'भारतीय लोगों का मैग्नाकार्ट' कहा गया। इस पत्र में महारानी के न्याय तथा धर्म के सिद्धांतों का स्पष्ट वर्णन था। 'गोद लेने का सिद्धांत' (जहां उत्तराधिकारी न होने पर रियासत को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया जाता था) को खत्म किया गया। साथ ही ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार की नीति को कुछ समय के लिए रोक दिया गया। इस घोषणा पत्र में ब्रिटिश लोगों की प्रत्यक्ष हत्या करने वालों के अतिरिक्त सब व्यक्तियों को माफी दी गयी जो ब्रिटिश के विरुद्ध हुए विद्रोह में शामिल थे। जुलाई 8,1859 को संपूर्ण भारत में शांति की घोषणा की गई। ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाएं ब्रिटिश फौज का हिस्सा बन गयी। इस घोषणा पत्र में भारतीय सिपाहियों को ब्रिटिश फौज में नियमित नियुक्ति दी गयीं। इसी कारण भारतीय सैनिक ब्रिटिश फौज द्वारा लड़े गए युद्धों में भाग ले पाए।

आइए देखते हैं कि सेना के क्षेत्र में कौन से सुधार हुए? ब्रिटिश भारतीय फौज समय के साथ शक्तिशाली होती गयी और नवीन तकनीकों जैसे बंदूक, राईफल और बारूद का प्रयोग करने लगी। 19वीं शताब्दी तक भारतीय फौज का कायाकल्प हो गया। भारतीय फौज अब केवल सुरक्षा गार्ड अथवा अस्थायी स्थानीय सैनिकों का दल नहीं थी अपितु व्यवसायिक लड़ाका फौज बन गयी थी। जिसमें पैदल सेना, घुड़सवार तथा तोपखाना शामिल थे। भारतीय सेना अब ब्रिटिश भारतीय फौज के नाम से जानी जाती थी। यह सेना बहादुरों, पेशेवर एवं ईमानदार सैनिकों का दल थी जिसमें एकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। इस संगठित सेना में उचित क्रियाकलाप और अनुशासन था जिसका परिचय प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्ध में मिला। भारतीय सैनिकों के कारण ही ब्रिटिश ये दोनों युद्ध जीत पाए।

भारतीय सेना में निम्न सैन्य सुधार हुए थे-

(क) पैदल सेना का संगठन - उचित क्षमताओं वाले व्यक्तियों को जिम्मेदारी प्रदान की गयी। जिस प्रकार एक कम्पनी में मैनेजर व सुपरवाइजर होते हैं, उसी प्रकार पैदल सेना

में 600 सिपाहियों के समूह में एक सूबेदार, एक जमादार, हवलदार, नायक होते थे। मुख्य अफसर ब्रिटिश ही थे और एक बटालियन में 6 ब्रिटिश अफसर होते थे। परन्तु बाद में भारतीय सैनिकों को भी अफसर बनाया गया। इन्हें किंग कमीशंड अफसर (KCO) कहते थे। KCO के प्रथम बैच में त्रिपुरा के कमांडर इन चीफ और कर्नल राणा जोधा जंग बहादुर, अमर सिंह, मेजर जनरल ए.ए. रूद्र, के.ए.डी. नैरोजी (दादा भाई नौरोजी के पौत्र), फील्ड मार्शल के.एम. करीप्पा तथा सी.बी. पोनप्पा शामिल थे।

(ख) घुड़सवार सेना का संगठन - घुड़सवार सेना में भी परिवर्तन किए गए। 1861 में बंगाल की घुड़सवार सेना को रेजिमेंटों में बांटा गया। हर रेजिमेंट में 420 सिपाही थे जिन्हें 6 सैन्य टुकड़ियों में बांटा गया। इस प्रकार कुल 499 रैंक थे जिनके नाम थे- रिसालदार (पैदल सेना के सूबेदार के समकक्ष), वर्दी मेजर, जमादार, दफादार (पैदल सेना के हवलदार के समकक्ष) तथा बिगुल बजाने वाले बिगुलर। हर रेजिमेंट में एक ब्रिटिश कमांडेंट तथा पांच ब्रिटिश अफसर होते थे। एक देशी घुड़सवार सेना तीन स्क्वाड्रन या समूहों में विभाजित थी। प्रत्येक एक्वाड्रन में 152 सिपाही व 152 घोड़े होते थे जिन्हें कुछ वर्षों के बाद टैंकों में विद्रोह के डर के कारण परिवर्तित किया गया। विद्रोह के पश्चात् पूर्ण प्रशिक्षित ब्रिटिश अफसर ही रेजिमेंट के मुखिया बने। उन्हें भारतीय भाषा का ज्ञान होना आवश्यक था ताकि वे लोगों से बातचीत कर सकें। विद्रोह के डर के कारण भारतीयों को निम्न कोटि के हथियार दिए जाते थे।

आपने क्या सीखा

- प्रस्तुत पाठ में आपने पहले स्वतंत्रता संग्राम व उनके कारणों को समझा।
- विद्रोह के प्रभावों के कारण सैन्य संगठन में कई परिवर्तन किए गए।
- ब्रिटिश भारतीय सेना को ब्रिटिश माडल के आधार पर व्यवसायिक सेना के रूप में गठित किया गया। उनकी एक व्यवस्थित रैंक प्रणाली तथा जिम्मेदारियां थीं।
- नियमित सैन्य प्रशिक्षण शुरू किया गया जो उनके द्वारा लड़े जाने वाले युद्धों में उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठांत प्रश्न

1. किस प्रकार ब्रिटिश भारत में राज करने में सफल हुए?
2. वंदीवाश के युद्ध एक संक्षिप्त नोट लिखिए।
3. 1857 के विद्रोह के कारण लिखिए।
4. किस पत्र को भारत का 'मैग्नाकार्टा' कहा गया है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. वेल्लोर विद्रोह 2. सिपाही विद्रोह 3. मंगल पांडे